ऊंच गांव में आधुनिक भट्ठियों पर बनेंगी चूड़ियां

लुपिन ने आईआईटी नई दिल्ली के सहयोग से बनाई भट्ठी, कम ईंधन में अधिक तैयार होगा माल

अमर उजाला ब्यूरो

नदबई,भरतपुर।

नदबई पंचायत समिति क्षेत्र के ऊंच गांव में कांच की हरे रंग की चूड़ियां बनाने वाले लोग अब आधुनिक भट्ठियों के माध्यम से कम लागत में अधिक उत्पादन ले सकेंगे। यहां परंपरागत भट्ठियों के स्थान पर लुपिन ने नई दिल्ली के रूटैग (रूरल टेक्नोलॉजी एक्शन ग्रुप) के सहयोग से अति आधुनिक भट्ठियों का निर्माण कराया है। इनमें सुरक्षित वातावरण में कम ईंधन से अधिक चूड़ियां तैयार की जा रही हैं।

ऊंच गांव में बनाई गई आधुनिक भट्ठी। अमर उजाला

ऊंच गांव में बनाई गई चूड़ियां। अमर उजाला

लुपिन के अधिशाषी निदेशक सीताराम गुप्ता ने बताया कि ऊंच गांव में कचेरा जाति के करीब 40 परिवार वर्षों से परम्परागत भट्ठियों पर चूड़ियां बनाते आ रहे थे। इन भट्ठियों में ईंधन की अधिक खपत होती है। साथ ही इनसे निकलने वाला धुंआं उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता था। कांच की जहरीली गैस भी अनेक बीमारियां पैदा कर भट्ठियों पर काम करने वाले व्यक्ति की उम्र को घटाकर 40 से 45 वर्ष कर देती है।

इस समस्या के निदान के लिए संस्था ने सर्वप्रथम राज्य के विज्ञान, प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से नवीन चूड़ी भट्ठियों का निर्माण कराया जिसमें धुआं निकालने के लिए18 फुट ऊंची चिमनी लगाने के अलावा भट्ठियों में फायर ब्रिक्स लगाई गई लेकिन इसके बाद भी धुआं निकलना पूरी तरह बंद नहीं हुआ। भट्ठियों पर काम करने वाले व्यक्ति को बैठने में परेशानी भी होने लगी। जिसपर इसके निदान के लिए संस्था ने आईआईटी नई दिल्ली के रूटैग से संपर्क किया गया। इस पर वैज्ञानिकों ने गांव में पहुंचकर समस्याएं जानीं और समाधान के लिये अति आधुनिक भट्टी का निर्माण कराया।

बताया कि इस आधुनिक भट्ठी में न तो धुआं निकलता है और न ही कांच की जहरीली गैसें बाहर आती हैं। जिससे भट्टी पर काम करने वाले आदमी के शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता।

इस भट्टी में फायर ब्रिक्स इस तरह लगाई गई हैं कि भट्टी का तापमान 1400 डिग्री सेंटीग्रेड पहुंचने के बाद भी काम करने वाले व्यक्ति के शरीर को प्रभावित नहीं करता है। इसके अलावा इस भट्टी में परंपरागत भट्ठियों के मुकाबले लगभग 50 प्रतिशत ईंधन की भी बचत होती है। साथ ही भट्टी पर काम करनेवाला व्यक्ति आसानी से बैठ सकता है जिससे उसे कोई थकावट नहीं होती। इस नवीन भट्टी से कांच की चूड़ी बनाने वाले लोगों का उत्पादन भी करीब दोगुना हो गया है।

ऊंच गांव में कांच की चूड़ी बनाने वाला कारीगर प्रतिमाह आसानी से करीब 6 हजार रूपये कमा लेता है। इन हरे कांच की चूड़ियों का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से शादी विवाहों में किया जाता है और इसके विक्त्रसेता गांव से ही चूड़ी खरीद ले जाते हैं। प्रतिवर्ष करीब 2 करोड़ रूपये की हरे कांच की चूड़ियों का व्यापार इस गांव से होता है। हरे कांच की चूड़ियों के विक्त्रस्य के कार्य में गांव के ही करीब एक दर्जन लोगों को रोजगार मिला हुआ है। वे गांव गांव जाकर इन चूड़ियों का विक्रय करते हैं। जबकि कुछ व्यापारी इन्हें थोक में खरीद ले जाते हैं।